नव भारत

जैसे घर बैठे हों काशीपति के दर्शन

पुस्तक का आवरण रंगीन एवं काशी की पृष्ठ भूमि की जारकारी देता हैष लेखकद्वय श्री मनोज ठक्कर एवं-रश्मि छाजेड बधाई के पात्र है कि उन्होंने धार्मिक विषय को रूचिकर बनाया रहस्य एवं रोमांच के माध्यम से ताकि पाठक रस सागर में डूबते हुए बढता जाये जब तक के उपन्यास समाप्त नहीं हो जाता वरन आजकल कहाँ किसके पास इतना समय है कि वह इतने बड़े उपन्यास को पढ़ने कि हिम्मच तक सके। में तो ये उपन्यास पढ़ने के पश्चात यह अनुभव कर रहा था कि जैसे मैंने गंगा मैया के पावन जल से स्नान कर काशीपति के दर्शन किये, घर बैठे ही।

उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है की इसका प्रारंभ काशी स्थित मणिकर्णिका महाश्मशान से होकर अंत भी यहीं होता है उसी तरह जिस तरह 'जहाज का पंछी उड़कर घूमता हुआ फिर जहाज पर ही आकर ठोर पाता है क्योंकि उसके पास और कोई ठोर जाने को नहीं है समुद्र में उपन्यास का शीर्षक काशी मरणान्मुक्ति अपने शीर्षक को सार्थक करता है महा की मुक्ति काशी में ही होने से।

उपन्यास का पूर्वार्द्ध उपन्यास के मुख्य पात्र महा के जन्म से लेकर प्रारंभ होता है। वहा उसके युवा होने तक कभी इधर तो कभी उधर भटकता रहता है और सि दौर में वह विभिन्न पात्रों- यशोदै राघव के मातृतव एवं पितृत्व प्रेम में पलते-बढ़ते हुए, इस्माइल चाचा, भूतनाथ, बुद्धेश, महात्मा के संपर्क में आता है जिनके माध्यम से ही उसे काशी का महात्मा ज्ञात होता हैष पूर्वाद्ध 337 पृष्ठों में सिमटता है। इन्ही पृष्ठों में महा को काशी के विभिन्न श्मशान घाटों की जानकारी होती है शहनाई के मधुर स्वरलहरों में पिरोये रागों को सुनने का अवसर मिलता है। इस्माइल चाचा न केवल अच्छे शहनाई वादक ही हैं बल्कि काशी सम्बन्धी पौराणिक इतिहास की जानकारी भी रखते है और महा को समय-समय पर बताते रहते है। उपन्यास का उत्तरार्द्ध महा के द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन करते हुए लौटकर काशी के महाश्मसान मामिकर्णिका में आकर मृत्यु को प्राप्त होकर मुक्ति पाने पर समाप्त होता है। पृष्ठ 502 पर पिर परिशिष्ट में पाठकों के उद्गार भी। कुल 69 अध्याय अर्थात 69 दिन की यात्रा। हर अध्याय के पहले पुराणों से शिव महिमा में कहे गए उद्धरण ज्ञानवर्धक लगे। पुन: लेखक द्वय को इतना भारी-भरकम उपन्यास प्रसाद के रूप में भक्तों को वितरित करने के लिए बधाई।

पुस्तक का नाम- काशी मरणआन्मुक्ति, **लेखक**- मनोज ठक्कर एवं रश्मि छाजेड़, **मुल्य** 360 रुपए, **प्रकाशक**-शिव ऊँ साई प्रकाशन, इंदौर